INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

February-2022 E-ISSN – 2348-7143

International Research Fellows Association's

RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

Peer Reviewed, Referred & Indexed Journal

Issue 287

Multidisciplinary Issue

Chief Editor -
Dr. [illegible]
Assist. Prof. (Marathi)
MGV's Arts & Commerce College,
Yeola, Dist – Nashik [M.S.] INDIA

Executive Editors :
Dr. [illegible] Nashikroad (English)
[illegible] Kinwat (Hindi)
Bhusawal (Marathi)
Goa (Konkani)

For Details Visit To : www.researchjourney.net

Swatidhan Publications

February-2022 E-ISSN : 2348-7143

International Research Fellows Association's

RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

Peer Reviewed, Referred & Indexed Journal

Issue-287

Multidisciplinary Issue

Chief Editor -
Dr. Dhanraj T. Dhangar,
Assist. Prof. (Marathi)
MGV's Arts & Commerce College,
Yeola, Dist – Nashik [M.S.] INDIA

Executive Editors :
Dr. Tejesh Beldar, Nashikroad (English)
Dr. Gajanan Wankhede. Kinwat (Hindi)
Mrs. Bharati Sonawane, Bhusawal (Marathi)
Dr. Rajay Pawar, Goa (Konkani)

Our Editors have reviewed papers with experts' committee, and they have checked the papers on their level best to stop furtive literature. Except it, the respective authors of the papers are responsible, answerable and accountable for their content, citation of sources and the accuracy of their references and bibliographies/references. Editor in chief or the Editorial Board cannot be held responsible for any lacks or possible violations of third parties' rights. Any legal issue related to it will be considered in Yeola, Nashik (MS) jurisdiction only.

- Chief & Executive Editor

SWATIDHAN INTERNATIONAL PUBLICATIONS
For Details Visit To : www.researchjourney.net

*Cover Photo : Rasia's attack on Ukrain (Source-Internet)

© All rights reserved with the authors & publisher

Price : Rs. 1000/-

INDEX

No.	Title of the Paper	Author's Name	Page No.
	English Section		
01	Information about Prehistoric Art in Central India at Bhimbetka	**Dr. Pravin Chavan**	05
02	Feelings of Isolation and Loss in Jhumpa Lahiri's '*When Mr. Pirzada Came To Dine*'	**Sahebrao Kamble**	12
03	Friendship and Love Life in Chetan Bhagat's '*Five Point Someone : What Not To Do At IIT*'	**Vinayak Khot**	15
04	Colonialism, Economics and Museums in Maharashtra	**Dr. Ashwinkumar Rathod**	18
05	Dalit Literature : A Voice of Revolt	**Dr. Rajendra More**	23
06	Performance Evaluation Study to Improve Efficiency of Effluent Treatment Plant in Automobile Industry	**Chandrakant Yelam, Shridhar Jadhav, Abhijit Thorat & Sanjaykumar Thorat**	26
07	Fluoride Comparative Study of Nagzari Lake, Loni Lake with Penganga River of Kinwat Taluka, Nanded District (M.S.)	**Dr. Anand Bhalerao**	32
08	A Correlational Study between Change Proneness and Psychological Well-Being among Organic Agricultural Population (N-150)	**Deepa Naik**	37
09	Study of Spider Fauna from the Cotton Fields of Vitala Village Near Wardha River Pulgaon, India	**Dipti Kadu**	43
10	Is Mobile based Applications a Possible Soulution to Tackle the Mental Health Challenges among Uniformed Forces : A Scoping Review	**Dr. Vinod Gajghate**	48
11	Study of Love Marriage Male and Arranged Marriage Male on Expectations from the Life Partner	**Dr. Sarika Kshirsagar**	54
12	Teacher's Effectiveness in COVID 19	**Dr. Ramesh Nikam**	59
13	Current Status of Online Teaching and Learning During Lockdown Period in Maharashtra	**Dr. Anand Shinde**	66
14	Ensuring Effective Online Teaching	**Dr. Lakshmi Muthukumar**	73
15	Significance of Canal Irrigation on Changes in Cropping Patterns	**Dr. Ankush Doke**	78
16	Values among Working Women and Non-Working Women	**Dr. C. P. Labhane, Anil Sawale**	83
17	Importance of Online Banking in Indian Economy	**Prof. Yuvraj Jadhav**	88
18	Bank Loan Disbursement to Self Help Groups through Karnataka Sahakara Sindhu	**Dr. Nirmala J.**	92
19	A Correlational Study between Environmental Attitude and Occupational Stress among Conventional Farmers (N-150)	**Deepa D. Naik**	101
20	Integrated Watershed Development in Northeastern Parts of (Raver Taluka) Dist: Jalgoan, Maharashtra : An Overview	**Dr. K. H. Nehete**	106
	हिंदी विभाग		
21	भारतीय काव्य में सांस्कृतिक जीवन मूल्य	**डॉ. वाल्मीक सूर्यवंशी**	109
22	आधुनिकयुग में भारतीय नारी के आदर्श	**डॉ. विमुखभाई पटेल**	112
23	स्त्री विमर्श के परिप्रेक्ष्य में 'निर्मला'उपन्यास	**डॉ. सरला तुपे, डॉ. सुजाता लामखडे**	116
24	महिला सशक्तीकरण और पंचायती राज : एक अध्ययन (उत्तराखंड के विशेष संदर्भ में)	**डॉ.शिखा जैन**	120
25	'मुझे चाँद चाहिए' उपन्यास में मध्यवर्गीय परिवार	**डॉ. सन्मुख मुच्छटे**	127

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Issue - 287 : Multidisciplinary Issue
Peer Reviewed Journal
E-ISSN : 2348-7143
February-2022

भारतीय काव्य में सांस्कृतिक जीवन मूल्य

प्रा. डॉ. वाल्मीक दशरथ सूर्यवंशी
सहायक प्राध्यापक,
महाराजा सयाजीराव गायकवाड कला, विज्ञानं एवं वाणिज्य महाविद्यालय,
मालेगांव कैंप, जि. नाशिक महाराष्ट्र
मो. 9421604624
Gmail- valmiksuryawanshi123@gmail.com

प्रस्तावना :

मानवीय जीवन मूल्य का इतिहास सृष्टि के आदिम काल से अपनी धाराएँ निर्धारित करता हुआ वर्तमान तक क्रमबध्द हैं | प्रत्येक युग के महान चिंतकों ने समयुगीन मानव जीवन के संबंध में विचार एवं चिंतन कर विभिन्न धर्मो, दर्शनों एवं विचारधाराओं के रूप में जो निर्णय लिए वे युगीन जीवन – मूल्य निर्धारित करने में सहायक सिध्द हुए |मानव जीवन का परम्परागत प्रवाह एतिहासिक और आधुनिक काल में समकालीन परिस्थितियों के अंतर्गत नूतन दिशा और क्षेत्र ग्रहण करता रहा हैं |

'जीवन –मूल्य' की परिभाषा करने से पूर्व 'जीवन' तथा 'मूल्य ' इन दो शब्दों का अर्थ समझ लेना उचित होगा | जीवन क्या है ?इस प्रश्न पर विभिन्न दृष्टिकोन से विवेचन किया गया है |फलत: इस संबंध में कोई अंतिम निर्णय नहीं किया जा सकता | अत: जीवन को परिभाषित करना कठिन कार्य है , अनुभूति सत्यों की पूर्णत:अभिव्यक्ति देना संभव नहीं तथा उसे शब्दों में समेटना भी संभव नहीं है;क्योंकि शब्दों की अर्थात भाषा की अपनी मर्यादा है| सामान्य रूप से 'जीवन'शब्द का प्रयोग जीवन धारियों के कार्य –कलापों ,उनकी मान्यताओं विश्वासों और उनके अनुभवों के लिय किया जाता है | मूलत: जीवन और परिवेश के मध्य क्रिया – प्रतिक्रिया का ही दूसरा नाम जीवन हैं |

जयशंकर प्रसाद "जीवन विश्व चेतना के आकार धारन करने की चेष्टा है|" १

नालंदा विशाल शब्द -सागर "जीवित रहने का भाव, प्राण धारन करना, जन्म से मृत्यु तक का समय जिंदगी |"२

'मूल्य' का अर्थ

जीवन मूल्य किसी समाज की उदात्तता के परिचायक होते हैं |मूल्य का समांतर अंग्रेज़ी शब्द है Value वास्तव में किसी समाज की विशेषताएँ या अन्य समूहों के लिए अनुकरणीय उपलब्धियाँ ही उसका मूल्य या Value कही जाती हैं | जीवन मूल्य का संबंध केवल अभ्यता से नहीं संस्कृति से होता है |'मूल्य'शब्द अंग्रेज़ी के वैल्यू शब्द का पर्याय है ,जो लैटिन भाषा के वोलेडे से बना है ,जिसका अर्थ सुंदर या अच्छा या उत्तम है |3 मूल्य शब्द की व्युत्पत्ति 'मूल्य' धातु के साथ 'यत' प्रत्यय लगाने से हुइ है, जिसका अभिप्राय है,किसी वस्तु में दिया जानेवाला धन ,दाम ,कीमत, बाजारभाव आदि | 'मूल्य' शब्द अर्थशास्त्र मे आया है|

'संस्कृति'शब्द मुलत:संस्कार पर आधारित हैं| 'संस्कार' रसायनशास्त्र का शब्द है| जिसका अर्थ होता है –'सम्यक क्रिया करना'एवं पारिभाषिक रूप में इसका अर्थ होगा 'शुद्ध करना'|इसी शब्द का जब मानवीय व्यवहार क्षेत्र में प्रयोग करते है|तब शब्द की लक्षणा शक्ति की सहायता से संस्कार को परिभाषित करते हैं|मानव की आदिम प्रवृतियों को विभिन्न नित्य ,नैमित्तिक और नैष्ठिक क्रियाओ और क्रमानुष्ठान आदि द्वारा शुध्द कर उन्हें सौम्य बना देना ही मानवीय संदर्भ में 'संस्कार'है|

संस्कृति शब्द संस्कृत भाषा के 'सम' उपसर्ग पूर्वक 'कृ'धातु से बना है | 'कृ' का अर्थ है करना ,कृत का अर्थ हुआ –किया हुआ तथा 'कृति'उसकी भाववाचक संज्ञा है| अत:'सम-कृति'में सम्यक रूप से या भली-भांति का अर्थ समाहित समझा जाकर 'संस्कृति'शब्द को इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है |४ संस्कृति शब्द का प्रयोग अत्यधिक व्यापक अर्थ में किया जाता है |जीवन की जिस विशिष्ठ विधि को अपनाकर हम प्राणिमात्र के साथ सहयोग एवं सहानुभूति की स्थापना करते है , सबको अपना समझने में सफल होते है| मत-मतान्तरों की भिन्नरुपता ,प्रथाओं एवं रीतियों की अनेकता जहाँ मानव-मानव में भेद नहीं डालती |अत:शुभ,भद्र नि:श्रेयस जहाँ सबके प्रेम का अधिष्ठान है|पारस्परिक 'सौन्दर्य' जिसकी अनिवार्य विशेषता है,संवेदनशिलता जिसका अमिट चिंतन है,वही संस्कृति है|५ सुमित्रानंदन पंत संस्कृति को विशुध्द मानव उपलब्धि मानते हुए कहते है,संस्कृति को मै मानवीय पदार्थ मानता हूँ जिसमें हमारे सूक्ष्म व स्थूल दोनों धरातलों के सत्यों का समवेश होता है| हमारे उर्ध्व चेतन शिखर का प्रकाश और समदिक जीवन की मानसिक उपत्यकाओं की छायाएं गुंफित हैं| उमके भीतर अध्यात्म ,धर्म, नीति,से लेकर सामाजिक रूढ़ि ,रीति तथा व्यवहारों का सौन्दर्य भी एक अंत:सामंजस्य ग्रहण कर लेता है|६ इसी क्रम में हजारी प्रसाद द्विवेदी ने संस्कृति को स्थायी एवं व्यक्ति के आतंरिक विकास की सूचिका मन है|७

प्राचीन काल से भारतीय समाज की रचना के लिए समाज के नागरिकों का सुसंस्कृत होना अनिवार्य है| संस्कारो से युक्त मानव इस भू को ही स्वर्ग बनाने की कल्पना करता है|संस्करों का उद्देश्य है संस्कृत जीवन का निर्माण|संस्कृत जीवन अर्थ है उन्नत ,उदात्त,दिव्य जीवन,मानवता का परिष्करण,दैवी अतिमानुष्य विभूतियों का आधान,परम उज्वल से उज्वल ज्योति स्वरूप शक्ति का मानव काया में अवतरण | भारतीयों के नैतिक स्तर को उठाने में संस्कार विशेष उपयोगी है| इन संस्कारों द्वारा प्राचीन ऋषियों ने जीवन के प्रत्येक अंग को गुणों से भरने एवं विकसित करने का सत्य प्रयास किया |

'संस्कृति' मानव- जीवन के बाहय ,आतंरिक ,बौधिक ,नैतिक तथा धार्मिक जीवन की अभिव्यक्ति करती है| सांस्कृतिक मूल्यों से अभिप्राय उन तत्वों का है,जो सत्य के संधान और सिध्दि में सहायक होते है| भारतीय संस्कृति की एक लंबी परंपरा है|भारतीय संस्कृति सामाजिक आदर्शों के साथ जुड़ी हुई है| सृष्टि के आदिम युग से ही मानव अपने जीवन की प्रगति एवं उन्नति के हेतु प्रयत्नशील रहा है|भारतीय संस्कृति का दर्शन ग्रामों में आज भी दिखाई देता है|कहा जाता है कि युग की ही विकृति का और संस्कृति का, जिसका संबंध ईश्वर धर्म, अध्यात्म ,नैतिकता और अंशत: कर्मकांड आदि से है| नई वैज्ञानिक भौतिकवादी उपलब्धियों की उपस्थिति में अब पुराकाल-सी प्रेरणा प्रदान करनेवाली नहीं रही| सांस्कृतिक अवमूल्यन ने नए आयाम गावों के नागरीकरन के परिप्रेक्ष्य में उद्घाटित हो रहे हैं| धर्म,दर्शन, साहित्य, संस्कार, विश्वास, स्नान, नदी, तीर्थ, शिक्षा, दीक्षा, वर्ग, मूर्तिपूजा, मंदिर, त्यौहार, विवाह, रीति, पोशाक ,गीत, कला ,कृषि, वाद्य, नृत्य आदि के सांस्कृतिक क्षेत्र आधुनिक जीवनक्रम में एक मनोरंजन के साधन मात्र या परंपरा का लालन है |उनमें जीवन के प्रति गहन गंभीर दृष्टिकोन एवं उत्कर्ष का शील संवेदित नही है|

महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित 'रामायण'तथा वेदव्यास द्वारा रचित 'महाभारत'में आर्य संस्कृति का चित्रण उपलब्ध है| इनमें वर्णित राक्षसों के संहार के लिए किए गए यज्ञ के अनुष्ठान व राजसूय यज्ञ आर्यकालीन यज्ञ –प्रतिष्ठानों की प्रमाणिकता और आर्य –अनार्य संघर्ष पर प्रकाश डालते है| भगवतगीता में श्रीकृष्ण ने यज्ञों के कर्मकांड के विरुद्ध भागवत –धर्म की स्थापना की और निष्काम कर्म व भगवतभक्ति पर बल दिया | ८ सीता स्वयंवर का चित्रण संस्कृति के आधार पर करते हुए 'सीता' काव्य में कवि ने लिखा है कि धनुष्य भंग के पश्चात् चारों ओर आनंद और उत्साह दिखाई देने लगता हैं | मंगलसूचक शहनाई एवं वाद्य बजने लगते है| मिथिला नगरी की विथियां ,गृह ,आँगन ,पथों से भर जाते हैं|९ वनवास से लौटने के पश्चात राम का राज्याभिषेक

समारोह अत्यंत उत्साह से मनाया जाता है|'जानकी जीवन' में इस प्रसंग का वर्णन करते हुए कवि ने लिखा है कि सभी तीर्थों जल लाया गया , सभी मांगलिक कार्य विधि के अनुसार पूर्ण किए गए| सभी समागतो को मंगलमय टिका लगाया गया| याचकों सत्पात्र दीनो,दुखियोकों धन बाटा गया ,स्त्रियों ने रामकी आरती उतारी|इस तरह का संस्कार राम- राज्य में था| १०

आज के संदर्भ में भारतीय संस्कृति में जीवन मूल्य ओतप्रोत भरे हुए होते भी संस्कारों पर खास कर ध्यान नहीं दिया जाता है| अत:मनुष्य ने धर्म का जो विकास किया,दर्शनशास्त्र के रूप में जो चिंतन किया, साहित्य –संगीत और कला का जो सृजन किया,सामूहिक जीवन को हितकर और सुखी वनाने के लिए जिन प्रथाओं को विकसित किया,उन सवका समावेश हम 'संस्कृति'में करते हैं|यही जीवन मूल्य मानव के व्यक्तिमत्व को विकसित करते हैं|

संदर्भ- ग्रंथ :

1) डॉ. विश्वनाथ नरवने –आधुनिक भारतीय चिंतन- पृष्ठ -८९
2) श्री नवलजी –नालंदा विशाल शब्दसागर –पृष्ठ -४३६
3) मानक हिंदी अंग्रेज़ी कोश ,-पृष्ठ -१४,८३
4) डॉ. भोलानाथ तिवारी –आधुनिक हिंदी साहित्य की पृष्ठभूमि-२९
5) डॉ.वावुराव पाण्डेय –सभ्यता और स.संस्कृति –पृष्ठ -१४
6) सुमित्रानंदन पंत –उत्तरा –पृष्ठ-१५
7) हजारी प्रसाद द्विवेदी –ममता और संस्कृति –पृष्ठ -४
8) डॉ.सत्यकेतु विद्यालंकार -भारतीय संस्कृति और उसका इतिहास-पृष्ठ-११६
9) चन्द्रप्रकाश वर्मा- सीता –पृष्ठ -२०६,२०७
10) राजाराम शुक्ल –जानकी जीवन पृष्ठ -४०